B.A Part II (Sub/Gen)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

Lecture III

भारत में निर्धनता के प्रमुख कारण =)

III) सामाजिक कारण => भारत का सामाजिक ढांचा ऐसा है जिसमें निर्धनता एक अनिवार्य स्थिति बन गई है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक असमानता के साथ आर्थिक असमानताएं भी जुड़ी हुई हैं। जाति व्यवस्था पर आधारित समाज में निर्धनता उन लोगों में विद्यमान है। जो निम्न जातियों के हैं और जिनको केवल सामाजिक स्तर के व्यवसाय करने की ही सामाजिक अनुमति है। वे निम्न सामाजिक स्तर के व्यक्ति भी भारतीय समाज में इस तरह विभक्त हैं जिसमें जाति ही शोषण पर आधारित सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के विरोध में एकत्र होकर संघर्ष करने की क्षमता भी नहीं है। भारत में अधिकांश निर्धन अनुसूचित जातियों के लोग हैं। गुन्नार मिर्डल ने भारत के सामाजिक कारणों को महत्व बतलाते हुए लिखा है कि धर्म भारत में गरीबों के लिए एक अफीम बनकर रह गया है जो इन्हें सामाजिक रूप से जड़ता और निष्क्रियता की ओर ले जा रहा है। भारत में अधिकांश व्यक्ति निर्धनता को अपना भाग्य मानकर संतोष कर लेते हैं। किन्तु वाडेकर ने समाज की परम्पराओं रीति-रिवाज, परिपाटियों, रूढ़ियों, कुरीतियों एवं सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों को भारत में निर्धनता का कारण माना है। एकमात्र जाति व्यवस्था को

आर्थिक प्रगति का शत्रु माना है। गुन्नार मिर्डल ने लिखा है कि," परम्परागत सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था में पाई जाने वाली सामाजिक असमानता आर्थिक असमानता को जन्म देती है और प्रगति के मार्ग में बाधा बन जाती है।

भेदभाव विरोधी धारणा वैरपूर्ण व्यवहार के कारण पायी जाती है। विकास की दृष्टि से एक क्षेत्र को दूसरे क्षेत्र से, एक समुदाय को दूसरे समुदाय से व एक समूह को दूसरे समूह से विभेदित किया जाता है। पर विभेदीकरण व्यक्ति, समूह व समुदाय को प्रगति से रोकता है व उनको अपनी आय बढ़ाने में बाधाएं डालता है। ये बाधाएं ही उनकी निर्धनता का कारण बन जाती है। भारत में अनुसूचित जातियों और जनजातियों में पायी जाने वाली निर्धनता का प्रमुख कारण ब्रिटिश सरकार की भेदमूलक नीति ही बताई गई है। स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी देना भी भेदभाव के कारण ही है।